रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १५: शुद्ध उदेशम (नीयत का बीज)

'शुद्ध उदेशम', नीयत का बीज, सच्चे-सुच्चे दयावान, गुरु नानक के नेक इरादों और उदारता की अभिव्यक्ति है जो उन्होंने हरे-भरे 'मालाबार' में समुद्र में जाते हुये पानियों में की थी।

साची सुरति नामि नही तृपते हउमै करत गवाइआ ॥
पर धन पर नारी रतु निंदा बिखु खाई दुखु पाइआ ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

सत्य का ज्ञान और आत्म-पड़ताल तृप्त नहीं करते और ज़िंदगी अहंकार में व्यर्थ जा रही है।
जो दूसरों की दौलत और पराई जीवन साथियों पर नज़र रखते हैं और निंदा के स्वाद का आनंद लेते है
वह ज़हर खा रहे हैं और इस कारण दुःख झेल रहे हैं।
(राग मलार, गुरु नानक)

असन्तोष मनुष्य की नकारात्मक सोच का आधार है जो अनैतिकता के लिये उपजाऊ ज़मीन बन जाती है। आलिम-फ़ाज़िल भी लालसाओं के शिकार हो सकते हैं। सदगुणों पर निर्माण हुई ज़िंदगी तृप्त करने वाला तजुर्बा हो सकती है।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से समुद्र के रास्ते श्रीलंका से इंडिया का सफ़र करना नामुमकिन है। इसलिये हम हवाई जहाज़ के रास्ते श्रीलंका से इंडिया गये और धनुषकोडी से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ाया।

मिथिहास में दर्ज है कि लंका के नये राजा विभीषण ने रामचंद्र से विनती की कि उसके राज्य को दुश्मनों से बचाने के लिये 'सेतु बंध' को नष्ट कर दें। रामचंद्र ने अपने धनुष से चलाये गये बाणों द्वारा पुल को नष्ट कर दिया और इस स्थान को 'धनुषकोडी' नाम दिया गया जिसका अर्थ है 'धनुष का अंत'। रूपक के तौर पर यह नकारात्मक सोच की बेड़ियों को तोड़कर सकारात्मक सोच का संरक्षक है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक और भाई मरदाना श्रीलंका से इंडिया लौटे और सेतु बंध के बंदरगाह पर उतरे, जिसे धनुषकोडी के नाम से भी जाना जाता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने धनुषकोडी से रामेश्वरम, त्रिवेंद्रम, कोट्टयम, अन्नामलाई पहाड़ियां, बिदर, नांदेड़ होते हुये दौलताबाद का सफ़र किया। पहले वह धनुषकोडी से रामेश्वरम गये।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये हम धनुषकोडी से रामेश्वरम की यात्रा कर रहे हैं और रामानाथास्वामी मंदिर जा रहे हैं।

रामेश्वरम का संस्कृत में अर्थ 'रामचंद्र के भगवान' है जिसका संकेत भगवान शिव है । रामायण के महाकाव्य के अनुसार, यहां राजा रामचंद्र ने भगवान शिव से राजा रावण के साथ युद्ध में हुई किसी भी ग़लती के लिये माफ़ी मांगने के लिये इबादत की थी। ऐसा माना जाता है कि रामचंद्र और उनकी पत्नी सीता ने भगवान शिव की नुमाइंदगी करने वाली एक शिवलिंग की मूर्ति स्थापित करवाई जो श्रीलंका से लाये गये काले पत्थर से बनी हुई है।

अमरदीप सिंह: रामेश्वरम शिव मत के सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों में से एक है। श्रीलंका से वापसी के समय गुरु नानक और भाई मरदाना इस शहर में 'जोगियों' के साथ गोष्ट करने आये थे।

गोष्ट के दौरान, जोगियों ने गुरु नानक से सवाल किया कि वह 'निर्गुण निरंकार के अनुयायी होने के बावजूद रामानाथास्वामी मंदिर में क्यों आये हैं, जब कि यहां इलाही की पूजा ‘'शिव’ के रूप में होती है। जवाब में गुरु नानक ने गाया,

एक निरंजन गुरमुख जाता ॥
दूजा मार सबद पछाता ॥६॥
एको हुकम वरतै सभ लोई ॥
एकस ते सभ ओपत होई ॥७॥
राह दोवै खसम एको जाण ॥
गुर कै सबद हुकम पछाणु ॥८॥
सगल रूप वरन मन माही ॥
कहु नानक एको सालाही ॥

(राग गौड़ी, गुरु नानक)

एकता के पाकीज़ा सत्य को विवेकशील व्यक्ति ही पहचान सकता है।
द्वैत का त्याग करने से ही विवेक का अहसास हो सकता है।
एकता में बंधा हुआ इलाही हुकम सर्वव्यापी है।
एक ज्योत से संपूर्ण कायनात की उपज होती है। सभी एक ही स्रोत से पैदा हुये हैं।
रास्ते दो हैं लेकिन सच्चाई एक ही है। सभी रूपों, दिलों और जातियों में उस एक का ही वास है।
आत्म-पहचान के माध्यम से कुदरत के नियमों को पहचानें।
यह सभी रूपों और वर्णों के दिलों में बसा है।
नानक कहते हैं कि वही एक अकेला ही प्रशंसा का पात्र हैं।
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

गुरु नानक ने 'जोगियों' की दुविधा का जवाब अपने अदवैत के फ़लसफ़े के माध्यम से दिया। उन्होंने वहदत में अपने विश्वास के समर्थन में फ़रमाया कि एकमात्र शक्ति सर्वोच्च है जो निरंकार, हाज़रा-हज़ूर और एकजुट है। उन्होंने स्पष्ट किया कि मंदिर में आने का उनका इरादा रूहानियत के मुसाफ़िरों के साथ संवाद करना था।

हम अब गुरु नानक की याद में बने स्थान 'नानक उदासीन मठ' जा रहे हैं, जो उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत में चंदू लाल द्वारा बनवाया गया था। चंदू लाल हैदराबाद के निज़ाम के वज़ीर थे।

उदासीन महंत नरिंदर दास ने उन्नीस सौ सत्तर के दशक के मध्य में यह स्थान चेन्नई की सिख बिरादरी को सौंप दिया था, जहां अब विशाल गुरुद्वारा बना हुआ है। आयोजन समिति ने महंत नरेंद्र दास द्वारा बनवाये गये यादगार का रख-रखाव किया है।

गुरु नानक का फ़लसफ़ा गूढ़ रूप से बहुत लोगों के दिलों में बसा हुआ था और है। स्पष्ट रूप से बंटवारे वाली सोच, ऐकता के घेरे को संकुचित करती है। विभिन्न अभिव्यक्तियों में से निरंकार, हाज़रा-हज़ूर और सर्वशक्तिमान की दृढ़ छवि उभरती है। इन रूपों का ज्ञान इंद्रियों के माध्यम से एक-दूसरे के साथ जुड़ना ऐकता का साक्षी है। यह तो मन है जो ग़लत-फ़हमियों के खेल खेलता है।

सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति ननाएक तुोही ॥
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥

(राग धनासरी, गुरु नानक)

तेरी अनेक आंखें हैं लेकिन फिर भी तेरी कोई नहीं है। तेरे अनेक रूप हैं लेकिन फिर भी तेरा कोई रूप नहीं है।
तेरे अनेक पैर हैं लेकिन फिर भी तेरा कोई पैर नहीं है। किसी नाक के बिना ही तेरे अनेक नाक हैं।
मेरे को तेरे खेल ने मोह लिया है।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना रामेश्वरम से समुद्र के किनारे-किनारे त्रिवेंद्रम पहुंचे जो मौजूदा दौर में केरल राज्य की राजधानी है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये हम अब रामेश्वरम से त्रिवेंद्रम जा रहे हैं।

त्रिवेंद्रम शहर का नाम 'थिरुवनंथापुरम' के नाम पर रखा गया है। इसका अर्थ है अनंत का स्थान जो भगवान विष्णु का हवाला है, जो हिंदू त्रिमूर्ति में संरक्षक हैं। श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित स्थानो मे से एक है और वैष्णव मत के तीर्थयात्रियों के लिये आकर्षण का केंद्र है।

त्रिवेंद्रम में गुरु नानक की कोई यादगार नहीं है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने त्रिवेंद्रम से कोट्टयम का सफ़र किया।

गुरु नानक के पद्चिन्हों पर हम त्रिवेंद्रम से कोट्टयम जा रहे हैं।

केरल राज्य का कोट्टयम शहर नदियों के ज़ाल में बसा है। यह अरब सागर में गिरने वाले पानी के लिये प्रसिद्ध है।

कोट्टयम में गुरु नानक की मेज़बानी जोगियों के डेरे ने की थी।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक और भाई मरदाना ने कोट्टयम की यात्रा की। जोगियों के साथ गोष्ट में गुरु नानक ने साझा करने के महत्व पर ज़ोर दिया।

एक प्रचलित कथा यह की जाती है कि 'जोगियों' ने गुरु नानक को तिल का एक बीज दे कर डेरे में बाँटने के लिये कहा। शायद वह यह उम्मीद कर रहे थे कि गुरु नानक कोई चमत्कार करेंगे। गुरु नानक की विशिष्टता यह थी कि वह अपने विचारों के सार को व्यावहारिक मिसालों के साथ व्यक्त करते थे। उन्होंने छोटे से तिल के बीज को अन्य सामग्री के साथ मिलाकर पीसा और डेरे में साझा करने के लिये आवश्यक मात्रा मे तैयार कर लिया। साझा के उसूल को सहजता से समझाते हुये उन्होंने कहा कि यदि साझा करने का इरादा है, तो साझा की जाने वाली चीज़ की मात्रा महत्वहीन है, चाहे उत्पाद को साझा करना हो या ज्ञान को ।

जे गुण होवन साजना मिल साझ करीजै ॥
साझ करीजै गुणह केरी छोड अवगण चलीऐ ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

यदि आप में गुण हैं, तो हे सज्जन, मिल कर उन्हें बांटो।
आइये साझ की जोड़ी बनाने और गुण बांटने वाले मार्ग पर चलें और अवगुणों से छुटकारा पायें।
(राग सूही, गुरु नानक)

पंडित तारा सिंह नरोत्तम ने अपनी किताब 'गुरु तीर्थ संग्रह' में दर्ज किया है कि 'उदासीन' बिरादरी ने गुरु नानक के आने की यादगार के तौर पर कोट्टयम के इलाके में तिलगंजी साहिब गुरुद्वारा बनाया था। इस स्थान को कुंडीकुटलम भी कहा जाता था। अब उस स्थान की कोई निशानी नहीं मिलती।

बीसवीं सदी की शुरुआत में गुरु नानक की जाती-पाती के ख़िलाफ़ आवाज़ के प्रभाव में, केरल राज्य में तीन सौ परिवारों ने सिख पहचान और फ़लसफ़े को अपनाया था। यह बिरादरी धीरे-धीरे अलोप हो गई है। हम स्थानीय निवासी लेफ्टिनेंट कर्नल लखवीर सिंह के घर जा रहे हैं, जिनके पूर्वजों ने सिख मज़हब अपनाया था।

लखवीर सिंह: गुरु नानक देव जी कायनाती गुरु थे। उनका अपना फ़लसफ़ा था। वह कर्मकाण्ड के विरुद्ध थे और उन्होंने रूहानियत की धुरी को पकड़ा था। वह सभी को एक ही नज़र से देखते थे। मज़हब, लिंग, जाति या किसी अन्य आधार पर भेदभाव नहीं करते थे।

लेफ्टिनेंट कर्नल लखवीर सिंह संभवत: केरल के मूल सिखों में अंतिम हैं।

गुर नानक और भाई मरदाना ने उत्तर में अन्नामलाई पहाड़ियों का सफ़र किया जो केरल और तमिलनाडु की सरहद पर पड़ता है।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर कोट्टयम से अन्नामलाई पहाड़ियों की ओर जा रहे हैं।

इस इलाके की घाटियों में नदी के किनारे पर घने जंगल है। इन पहाड़ियों की निचली ढलानों पर मूलनिवासी जनजाति रहती थी, जिसका नाम 'कडान' था, 'कडान' का मतलब पहाड़ियों के मालिक है। 'कडान' लोगों को 'कौड़ा' भी कहा जाता है। उनका बाहरी दुनिया से बहुत कम संपर्क था, जिससे उनका स्वभाव अंतरमुखी हो गया था। वह शायद दक्षिण इंडिया के सबसे पुराने निवासी हैं। इनके कद छोटे, होंठ मोटे और बाल घने-घुंघराले हैं। वह जंगल से अपना भोजन इकट्ठा करते है और गुफ़ाओं या घास-फूस की झोपड़ियों में गुज़ारा करते है।

जब गुरु नानक और भाई मरदाना इस इलाके से गुज़र रहे थे, तो वह भोजन की तलाश में जंगल में चले गये। उन्हें घुसपैठिया समझ कर 'कौड़ा' जनजाति के एक सदस्य ने भाई मरदाना को बंदी बना लिया। गुरु नानक ने उन्हें अपने आने का कारण समझाया और भाई मरदाना को किसी भी तरह नुकसान से बचा लिया। उन्होंने कहा कि डर सोच और फ़ैसलों पर हावी हो जाता है। जब हम एक ही फ़िज़ा का हिस्सा हैं तो हम अपने हमजोलियों से क्यों डरते हैं?

गुरु नानक के शबदों की गंभीरता को समझते हुये 'कौड़ा' जनजाति ने भाई मरदाना को रिहा कर दिया। गुरु नानक के शबदों ने 'कडान' लोगों के दिलों को छू लिया। कहा जाता है कि उसके बाद इस जनजाति का स्वभाव कम अंतरमुखी हो गया और उनके अंदर आज़ाद-ख़्याल सोच को बढ़ावा मिला।

भै विच आवहि जावहि पूर ॥
सगलिआ भउ लिखिआ सिर लेख ॥
नानक निरभउ निरंकार सच एक ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

भय में बहुत आते हैं और चले जाते हैं।
हर प्रकार के भय मनुष्य की अपनी सोच के मुताबिक ही उस पर पड़ते हैं।
नानक ने फ़रमाया कि निर्भय निरंकार ही एकमात्र सत्य है।

(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने अन्नामलाई पहाड़ियों से बिदर का सफ़र किया जो कर्नाटक राज्य के उत्तरपूर्वी हिस्से में एक पहाड़ी शिखर पर बसा शहर है।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर अन्नामलाई पहाड़ियों से बिदर जा रहे हैं।

यह इलाका कभी बांस का घना जंगल हुआ करता था। बिदर शब्द भी 'बिदिरू' से बना है जिसका अर्थ बांस है। बिदर 200 वर्षों तक बहमनी साम्राज्य का हिस्सा था जो दक्षिण इंडिया में एक पर्शियन इस्लामी राज्य था। जब सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में गुरु नानक बिदर पहुंचे, तब बहमनी सल्तनत की हालत ख़राब हो चुकी थी और इस इलाके पर पिछले दरवाज़े से अमीर बैरद शाह की पकड़ बन गई थी। उस काल के हुक्मरान की निशानियां आज भी शहर के नक्श निखारती हैं।

हर बिन किउ धीरै मन मेरा ॥
कोट कलप के दूख बिनासन साच हड़ाइ निबेरा ॥
(राग सारंग, गुरु नानक)

आत्म पड़ताल के बिना मेरे मन को कैसे धैर्य मिल सकता है?
गुनाह और पाप की अनंत भावना से मुक्ति सत्य की समझ से ही हो सकती है।
(राग सारंग, गुरु नानक)

असुरक्षा से ही ताकत की लालसा का इज़हार होता है। लोग अपने अहंकार को चारा देने के लिये दूसरों को हिंसा या मनोवैज्ञानिक हमलों से कमज़ोर करते हैं। ताकत की नुमाइश करने के लिये बनाई गई, परन्तु अब खंडहर हो चुकी, इन इमारतों से मैं क्या सीख सकता हूं?

गुर नानक ने फ़रमाया है कि अहंकार से उत्पन्न होने वाली शिकायतों को केवल इस अहसास के साथ ही हल किया जा सकता है कि आकांक्षायें अस्थायी अभिव्यक्ति हैं। इसलिये मन को सदभावना की ओर बढ़ने का प्रयास करना चाहिये।

हम बिदर के ऐतिहासिक नानक झीरा गुरुद्वारे जा रहे हैं।

(कीर्तन गायन)

यह देखना दिल को छू लेने वाला है कि इस गुरुद्वारे में सभी समुदायों के लोग इबादत करने आते हैं।

अमरदीप सिंह: बिदर गुरुद्वारे में पानी का चश्मा गुरु नानक और भाई मरदाना की इस शहर में आने की याद दिलाता है। सिख और हिंदू इस जगह को नानक झीरा कहते हैं और मुसलमान इसे चश्मा-ए-शाहदा कहते हैं।

बिदर में नानक झीरा गुरुद्वारे के पास दो मुसलमान फ़क़ीरों, जलाल-उद-दीन और सैयद याकूब अली के मज़ार हैं।

चारों रूहानियत के आरज़ूमंदों ने गोष्ठी के दौरान लोगों के अपनी-अपनी मान्यता के प्रति झुकाव और दृष्टिकोण के बारे में विचार साझा किये। लोग अहंकार में अपने मज़हब की प्रतिष्ठा को बढ़ाकर दूसरों के मज़हब को कमज़ोर साबित करते हैं। यह झुण्ड वाली मानसिकता लोगों में फूट डालती है और दर्जाबंदी करती है जिससे उनकी मानवता की ऐकता और आपसी संबंधों को समझने की सलाहियत कमज़ोर होती है।

जल थल जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥
ओइ जि आखहि सु तूँहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥
नानक भगता भुख सालाहण सच नाम आधार ॥
सदा अनंद रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छार ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

जल, भूमि और समस्त सृष्टि में जीवन का वासा है जिन का आकार है और जो अनाकार हैं।
वह जो कहते हैं हाज़रा-हज़ूर जानते हैं। वह स्वयं भी उसकी मौजूदगी से वाकिफ हैं।
नानक ने फ़रमाया कि भक्तों को हाज़रा-हज़ूर की सलाहियत की भूख होती है और सत्य उनका आधार है।
वे दिन-रात अनंत आनंद मे लिन रहते हैं। मैं उन गुणवानों के चरणों की धूल हूं। मैं उन गुणवानों के चरणों की धूल हूं।

(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि वह उन लोगों का सम्मान करते हैं जो ऐकता की सच्चाई को समझ गये हैं और खुशहाल ज़िंदगी गुज़ारते हैं।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर उत्तर की तरफ़ जा रहे हैं। उनके पदचिन्हों से कुछ हट कर हम भगत त्रिलोचन की यादों से जुड़ने के लिये बारशी जा रहे हैं। भगत त्रिलोचन संत थे जिनका फ़लसफ़ा गुरु नानक के अनुरूप है।

भगत त्रिलोचन का जन्म बारह सौ उनहत्तर ईस्वी में सौदागर बिरादरी के घर हुआ था। हिंदू जाति व्यवस्था के अनुसार, वह 'वैश्य' थे जो तीन उच्च जातियों में शामिल है। भगत त्रिलोचन के जन्मस्थल के बारे में कोई सहमति नहीं है। कुछ इतिहासकारों का दावा है कि महाराष्ट्र राज्य में उनका गांव बारशी था। दूसरों ने उल्लेख किया है कि उनका जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ था लेकिन उन्होंने अपना जीवन बारशी में बिताया।

बारशी में भगत त्रिलोचन से जुड़ा कोई मंदिर नहीं है।

भगत त्रिलोचन क्रांतिकारी 'भगती' आंदोलन के तर्ज़मान थे। उनके नाम त्रिलोचन का अर्थ है 'तीन आंखों वाला' और उनकी रूहानी नज़र सामाजिक कुरूतियों को पहचानती थी। भगत त्रिलोचन ने कर्मकांड की निंदा की। मज़हबी लिबास धारण करने पर दिये अतिरिक्त बल तथा रूहानी ज़िंदगी जीने के लिये गृहस्थ के त्याग के ख़िलाफ़ उन्होंने आवाज़ बुलंद की। उन्होंने मुक्ति के राह के तौर पर रूहानियत के चाहने वालों के बीच संगत को मोक्ष का मार्ग बताया। गुरु नानक और भगत त्रिलोचन के जीवन काल में सदियों का फ़ासला था परन्तु उनके फ़लसफ़े में सांझ थी। भगत त्रिलोचन के शबद गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं। गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल एक शबद में भगत त्रिलोचन लिखते हैं,

काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी ॥
लख चउरासीह जिन उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥३॥
काइ कमंडल कापड़ीआ रे अठसठ काइ फिराही ॥
बदत तृलोचन सुन रे प्राणी कण बिन गाहु कि पाही ॥
(राग गूजरी, भगत त्रिलोचन)

क्यों जप करना है, क्यों तप करना है और पानी को क्यों मथना है?
निरंजन सृजनहार पर ध्यान दें जिसने बहुरूपी ज़िंदगी का सृजन किया है।
मज़हबी लिबास डालकर कमंडल क्यों उठाना है और अट्ठासी तीर्थ क्यों करने हैं?
त्रिलोचन ने फ़रमाया कि सुन ओ नासमझ मनुष्य! वह फ़सलों की क्यों गाही कर रहा है जिनमें दाना ही नहीं है?
(राग गूजरी, भगत त्रिलोचन)

आंतरिक तब्दीली की कीमत पर बाहरी अमलों से जुड़ने के खोखलेपन के बारे भगत त्रिलोचन ने कहा कि ऐसे कर्म मनुष्य का अपने-आप से और दूसरों के साथ धोखा हैं। यह बिना दाने वाली फ़सलों की छंटाई करने जैसा है।

गुरु नानक और भाई मरदाना बिदर से नांदेड़ के लिये चल पड़े।

बारशी का चक्कर लगाने के बाद हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र फिर से शुरू कर रहे हैं।

नांदेड़ शहर का नाम भगवान शिव से पड़ा है जो हिंदू त्रिमूर्ति में तबाही की नुमाइंदगी करते हैं। नांदेड़ प्राचीन शहर है जिसमें कई संस्कृतियां समाई हुई हैं। राजा अशोक ने अपने दौर में यहां बौद्ध मज़हब की निशानियां छोड़ीं। मुगलों के राज में सूफ़ी आये। सिख इतिहास के भी पदचिन्ह हैं क्योंकि गुरु गोबिंद सिंह ने अपना अंतिम समय यहां बिताया था।

हम नांदेड़ के बाहर गुरुद्वारा मालटेकरी जा रहे हैं जो गुरु नानक के नांदेड़ आने की यादगार के तौर पर बना है।

मालटेकरी दो शब्दों का जोड़ है। माल का अर्थ है ख़ज़ाना और टेकरी का अर्थ है पहाड़ी। कहा जाता है कि फ़कीर लक्कड़ शाह की नज़र कमज़ोर थी और उन्हें चलने में भी कठिनाई थी। उन्होंने इस पहाड़ी पर ख़ज़ाने की रखवाली की।

अमरदीप सिंह: नांदेड़ की यात्रा के दौरान, गुरु नानक और फ़कीर सैयद हुसैन लक्कड़ शाह की मुलाकात हुई। उनका रूहानी संवाद 'माल टीला' पर हुआ। यहां फ़कीर सैयद हुसैन लक्कड़ शाह की मज़ार है और इस तरफ गुरुद्वारा मालटेकरी है।

हमारी संवेदना इंद्रियां अनुभव के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाती हैं। मैं सोचता हूं कि क्या कुछ इंद्रियों की योग्यताओं से महरूम लोग रूहानी ज्ञान के कुछ पहलुओं से वंचित रह जाते हैं या इसके विपरीत अपनी निर्बलता के कारण ज़्यादा सुसज्जित होते हैं।

अनहद वाजै भ्रम भउ भाजै ॥
सगल बिआप रहिआ प्रभ छाजै ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

जब अनहद नाद गूंजता है तो भ्रम और भय भाग जाते हैं।
कायनाती शक्ति सर्वव्यापी है और सभी पर छाया करती है।
(राग मारू, गुरु नानक)

मानव समझ मन को पहचान के सांचे में ढाल देती है, जिससे हर जन को आपस में जोड़ने वाली रूह की मौलिक ध्वनियों को महसूस करने की सलाहियत को नुकसान पहुंचता है। त्रासदी यह है कि शारीरिक रूप से स्वस्थ मनुष्य अपने मोह के कारण दृष्टिहीन हो जाता है; घृणा उसे अपाहिज कर देती है और अहंकार उसे बहरा बना देती है। गुरु नानक ने फ़रमाया कि जब मनुष्य के अंदर 'अनहद' राग बजता है, तो कायनाती सत्य प्रकट होते हैं और यह प्रवृत्ति मानव की संवेदना इंद्रियों पर निर्भर नहीं है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये उत्तर की ओर हम नाँदेड़ से हिंगोली की ओर जाने के लिये रास्ता से घुमाव ले कर। हम भगत नामदेव की यादों से जुड़ने जा रहे हैं। भगत नामदेव का फ़लसफ़ा भी गुरु नानक से मिलता है।

सारी दुनिया को 'सगुण' से नवाजें।
(भगत नामदेव)

भगत नामदेव प्रसिद्ध संत थे जिनका जन्म वर्ष बारह सौ सत्तर ईस्वी में महाराष्ट्र के गांव, नारसी में हुआ था। वह पेशे से रंगरेज़ थे जो कपड़े रंगते थे। वह 'छिम्बा' बिरादरी से थे जिसे निचली जाति माना जाता था। वह गुरु नानक से बहुत पहले पैदा हुये थे, पर दोनों संतो की बाणी गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज होने के हवाले से रूहानी रहबर इकट्ठे ही रहते हैं।

हिंगोली में हम औंधा नागनाथ मंदिर जा रहे हैं जो भगवान शिव को समर्पित है।

इस मंदिर से भगत नामदेव की एक घटना भी जुड़ी हुई है। कथा यह की जाती है कि उच्च जाति के ब्राह्मणों ने उन्हें दुत्कारा और उन्हें औंधा नागनाथ मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी। जब वह श्रद्धा से इस मंदिर की पिछली दीवार की ओर बैठ गये, तो गर्भगृह घुम गया था।

मेरी विनम्र समझ के अनुसार, इस मंदिर के गर्भगृह के घूमने वाली कहानी का अर्थ है - सृजनहार की हाज़रा-हज़ूरी और सर्वव्यापकता।

नारायण काली दास राव: यह जो मंदिर है, यह बारह ज्योतिरलिंगों में से आठवां ज्योतिरलिंग है। नागेश्वरम द्वारका के संत नामदेव महाराज यहां ज़ियारत करने आये थे। वह पूर्व दिशा की ओर अपनी भक्ति, गायन-कीर्तन कर रहे थे, तभी उन्हें मंदिर के पीछे भक्ति-कीर्तन करने के लिये कहा गया। जैसे-जैसे वह भक्ति कीर्तन करते-करते, पूर्व से पश्चिम की ओर जा रहे थे, उनका भक्ति कीर्तन सुनने के लिये भगवान शिव जी ने, नागेश्वर भगवान ने, अपने मंदिर का मुंह पूर्व से पश्चिम की ओर कर दिया। यही इस स्थान का महत्व है। नामदेव महाराज जी, महाराष्ट्र के महान संत बन गये हैं। उन्होंने कहा है कि भक्ति मार्ग से भगवान को प्राप्त किया जा सकता है।

देही महजिद मन मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥
बीबी कउला सउ काइन तेरा निरंकार आकारै ॥
भगत करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥
नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥
(राग भैरव, भगत नामदेव)

मानव शरीर मस्जिद है और मन मौलाना है जो कोमलता से नमाज़ पढ़ता है।
जैसे बीबी कौलां के बहुत सारे नौकर हैं, उसी तरह हाज़रा-हज़ूर के कई रूप हैं।
मैं तेरी भक्ति कर रहा था तब मेरे छैणे छीन लिये गये अब मैं किसके आगे पुकार करूं?
नामदेव के स्वामी अन्तर्यामी हैं। वह हृदय की जानते हैं और सर्वत्र दिशाओं में व्याप्त है।
(राग भैरव, भगत नामदेव)

भगत नामदेव ने कहा कि हम सब एक ही मिट्टी के बने हैं; द्वैत या बेगानगी हमारे ख़्यालों में निवास करती है।

भगत नामदेव 'भगती' आंदोलन में 'वारकारी' बिरादरी के संस्थापक थे। वह अपने भक्ति गीतों के लिये पूरे इंडिया में प्रसिद्ध हुये। भगत नामदेव निर्गुण-सरगुण फ़लसफ़े की बुलंद आवाज़ थे। निर्गुण धारा निरंकार सृजनहारे की धारनी है और सरगुण धारा सृजनहार के किसी भी रूप में इज़हार की धारनी है।

नामदेव जहां भी गये, पवित्र स्थान उनके पीछे रहा और अपने सृजनहारे हाज़रा-हज़ूर की प्रशंसा हुई।
सर्वव्यापक सृजनहार ने नामदेव के हाथों से दूध पिया।
नामदेव जहां भी गये, पवित्र स्थान उनके पीछे रहा और अपने सृजनहारे हाज़रा-हज़ूर की स्तुति हुई।
ओ देवा आपके और मेरे बीच यह बिछोड़ा क्यों है?
(भगत नामदेव)

भगत नामदेव की विरासत को आधुनिक दौर में उनके भक्तों ने जीवित रखा है। सदियों से उनका फ़लसफ़ा विभिन्न वर्गों और जातियों के लोगों के दिलों को छुता आया है, जिसका इज़हार भक्ति गीत गाने वाली संगत में होता है।

मैंने तेरी अच्छाई के बारे में सोच-विचार करके विवेक हासिल किया है।
जब मेरी सोच ख़ुदाई से जुड़ी होती है तो ज़िंदगी भर के कष्ट ख़त्म हो जाते हैं।
(भगत नामदेव)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने नांदेड़ से दौलताबाद का सफ़र किया।

भगत नामदेव से जुड़े स्थान से हो कर अब हम फिर से गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलकर दौलताबाद जा रहे हैं।

दौलताबाद महाराष्ट्र का एक शहर है। इसका इतिहास एक हज़ार ईसा पूर्व का है। यह शहर अपने पहाड़ चीर कर बने विहारों और मंदिरों के लिये प्रसिद्ध है।

अमरदीप सिंह: दौलताबाद में इलोरा की गुफ़ाओं के खंडहरों से झलक मिलती है कि इस इलाके में हिंदू, जैन और बौद्ध मज़हब प्राचीन समय से प्रचलित थे।

पहले यहां यादव राजाओं का राज था और दौलताबाद का नाम देवगिरी था, जिसका अर्थ है 'पहाड़ों के देवता'। इसके बाद तेरह सौ बाईस ईस्वी मे दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लक द्वारा इसका नाम बदलकर दौलताबाद रखा गया, जिसका अर्थ है "तकदीर का शहर"। मुहम्मद बिन तुग़लक अपनी सनक और अनोखे मनसूबओं के लिये प्रसिद्ध हुआ। पूरे इंडिया पर शासन करने के इरादे से, उसने राजधानी को दिल्ली से देवगिरी और फिर वापिस दिल्ली स्थानांतरित करने का एक अमानवीय निर्णय लिया और हज़ारों लोग इस व्यर्थ सफ़र के शिकार हुऐ।

जिउ आरण लोहा पाइ भंन घड़ाईऐ ॥
तिउ साकत जोनी पाइ भवै भवाईऐ ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

जैसे भट्टी में लोहा पिघलाया जाता है और फिर से उसे आकार दिया जाता है
उसी प्रकार भौतिकवादी मनुष्य लक्ष्यहीन होकर भटकता रहता है।
(राग सूही, गुरु नानक)

बेलगाम और निरंकुश सत्ता की लालसा भृष्ट करती है। मनुष्य की ग़ैर-महफ़ूज़ियत की भावना और मलकियत खो जाने का ख़ौफ़ उसे हर चीज़ वश में रखने की ज़रूरत के तौर पर ज़ाहिर होता है। गुरु नानक ने फ़रमाया कि जैसे लोहा बारी-बारी से ढाला जाता है, वैसे ही मनुष्य भी उस समय तक इसी तरह के दोहरे मन में बार-बार फंसता है जब तक कि वह अपने कर्मों से सबक सीखने के लिये तैयार नहीं होता हैं।

विभिन्न लोगों और संस्कृतियों के साथ इस शहर के ऐतिहासिक, मज़हबी और सियासी जुड़ाव के कारण गुरु नानक ने शायद यहां आने का फ़ैसला किया।

अमरदीप सिंह: दौलताबाद की सूफ़ी दरगाहें गवाही देती हैं कि यह शहर इस्लाम के प्रसार के लिये दक्षिण और दक्षिणी इंडिया का प्रवेश द्वार था।

दौलताबाद में गुरु नानक के इस इलाके में आने की कोई निशानी नहीं है।

गुरु नानक ने अपने शबदों में नाइंसाफ़ी को पुरज़ोर चुनौती दी और इंसानी हक़ूक़ की वकालत की। बाद में सिख गुरुओं ने इन मूल्यों को आगे बढ़ाया।

औरंगाबाद जिला मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब का अंतिम विश्राम स्थल था, जो अपने मज़हबी ज़ुल्म के लिये जाना जाता था। गुरु तेग़ बहादुर ने सोच और विश्वास की आज़ादी का झंडा फहराया। इसी लोकतांत्रिक सोच के कारण बादशाह औरंगज़ेब ने उन्हें दिल्ली में सज़ा-ए-मौत देने का आदेश दिया।

बादशाह औरंगज़ेब की समाधि को देखते हुये, मुझे गुरु नानक का शबद याद आ रहा है जिसमें उन्होंने विनम्रता और झूठे अहंकार के बीच का अंतर पेश किया है। गुरु नानक ने अहंकार में डूबे व्यर्थ मानव जीवन की तुलना सेमल के पेड़ से की जो लंबा और बढ़ा होता है लेकिन मीठे फल देने मे नाकाम होता है।

सिंमल रुख सरीर मै मैजन देख भुलंन ॥
से फल कंम न आवन्नी ते गुण मै तन हंन ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

मेरा शरीर सेमल वृक्ष के समान है जिसकी सुंदरता को देखकर पक्षी धोखा खा जाते हैं।
जैसे इस वृक्ष के फल बेकार है वैसे ही मेरे बहुत गुण नकारात्मक हैं।
(राग सूही, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १५: शुद्ध उद्देशम (नीयत का बीज)

यह एपिसोड गुरु नानक की दक्षिण भारत यात्रा के ऐतिहासिक महत्व और रुहानी समृद्धि को उजागर करने वाले प्रेरणादायक चर्चा बिंदु प्रस्तुत करता है। विभिन्न समुदायों और रुहानी परंपराओं के साथ उनके वार्तालाप का विश्लेषण करके, हमें यह समझने में सहायता मिलती है कि गुरु नानक ने एकता, स्पष्ट उद्देश्य, नि:स्वार्थ साझेदारी, भय और अहंकार पर विजय, तथा यह समझ कि इंद्रिय ज्ञान रुहानी सच्चाइयों को पूरी तरह नहीं समझ सकता—इन संदेशों को व्यावहारिक रूप में कैसे प्रदर्शित किया। ये प्रश्न हमें इस पर चिंतन करने के लिए आमंत्रित करते हैं कि कैसे दक्षिण भारत की उनकी यात्रा धार्मिक विभाजनों के बीच पुल बनाने और कर्मकांड व मतवाद से परे रुहानी सार पर ध्यान केंद्रित करने की उनकी व्यापक दृष्टि को प्रतिबिंबित करती है। जिन स्थलों पर उनकी यात्राओं की स्मृति में स्मारक बने हैं, वे भक्ति संतों जैसे भगत त्रिलोचन और भगत नामदेव की विरासत के समानांतर हैं, और यह दर्शाते हैं कि धार्मिक व सांस्कृतिक विविधता से युक्त क्षेत्र में उनकी समावेशी विचारधारा का स्थायी प्रभाव है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की दक्षिण भारत यात्रा मार्ग का क्या महत्व था, और विविध धार्मिक परिदृश्य ने उनके वार्तालापों को कैसे प्रभावित किया?

एपिसोड उनके धनुषकोडी से रामेश्वरम, त्रिवेंद्रम, कोट्टयम, अन्नामलाई हिल्स, बीदर, नांदेड़ और अंततः दौलताबाद तक के मार्ग का पता लगाता है। इस यात्रा ने उन्हें अनेक धार्मिक परंपराओं से परिचित कराया—शैव और वैष्णव मंदिरों से लेकर आदिवासी समुदायों और इस्लाम से प्रभावित क्षेत्रों तक। इन विविध सांस्कृतिक संदर्भों ने गुरु नानक को उनके संदेश की सार्वभौमिकता प्रदर्शित करने के लिए कैसे अवसर प्रदान किए?

२. दक्षिण भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु नानक की यात्राओं को समय के साथ कैसे स्मरण किया गया है, और इससे उनके ऐतिहासिक प्रभाव के बारे में क्या पता चलता है?

एपिसोड गुरु नानक की स्मृति में स्थापित कई स्थलों को उजागर करता है, जैसे कि रामेश्वरम का 'नानक उदासीन मठ' जिसे बाद में गुरुद्वारे के रूप में विकसित किया गया। इसमें बीदर का ऐतिहासिक नानक झीरा गुरुद्वारा, जो अपनी जलधारा के लिए प्रसिद्ध है, और नांदेड़ के पास का माल टेकड़ी गुरुद्वारा भी शामिल है। इसके विपरीत, कोट्टयम क्षेत्र (जिसे कुंडीकुटलम भी कहा जाता है) में स्थित तिलगंजी साहिब गुरुद्वारा जैसे कुछ स्थल समय के साथ लुप्त हो गए। किन कारणों से कुछ स्थलों का अस्तित्व बना रहा जबकि अन्य समाप्त हो गए?

३. दक्षिण भारत यात्रा के दौरान गुरु नानक के अन्य रुहानी व्यक्तित्वों के साथ वार्तालापों से हम क्या सीख सकते हैं?

एपिसोड उनके योगियों (सन्यासियों) के साथ रामेश्वरम में, अन्नामलाई हिल्स में स्थानीय 'कौड़ा' जनजाति के साथ, और मुस्लिम फकीरों जैसे जलाल-उद-दीन, सयद याकूब अली, और फकीर सय्यद हुसैन लक्कड़ शाह के साथ संवादों को दर्शाता है। ये वार्तालाप अक्सर धार्मिक पूर्वग्रहों को दूर करने और सम्पूर्ण मानवता की एकता को स्वीकार करने के केंद्र में थे। इन वार्तालापों ने दक्षिण भारत में गुरु नानक की विचारधारा की स्वीकार्यता को कैसे आकार दिया?

४. भगत त्रिलोचन और भगत नामदेव जैसे संतों की विरासत से गुरु नानक की रुहानी प्रभाव को समझने में क्या सहायता मिलती है?

यद्यपि भगत त्रिलोचन का जन्म १२६९ ई. में और भगत नामदेव का जन्म १२७० ई. में हुआ, दोनों गुरु नानक से कई शताब्दी पहले के हैं। फिर भी, उनके रुहानी संदेश गुरु नानक की विचारधारा से गूंजते हैं। उनके सबद बाद में गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किए गए, जो इस संबंध का प्रमाण हैं। दोनों संतों ने कर्मकांड की आलोचना की और रुहानी रूपांतरण के महत्व पर बल दिया। यह विचारधारा की निरंतरता भारत में भक्ति आंदोलनों के विकास के बारे में क्या संकेत देती है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. कोट्टयम की तिल के बीज का वृत्तांत गुरु नानक की साझेदारी और उदारता की विचारधारा के बारे में क्या उजागर करती है?

जब योगियों ने गुरु नानक से अपनी संगति के साथ केवल एक तिल साझा करने के लिए कहा, तो उन्होंने दिखाया कि साझा करने की भावना मात्रा से अधिक महत्वपूर्ण है। अपने सबद के माध्यम से उन्होंने बताया कि यदि आपके पास गुण हैं, तो एक साथ आना, उन्हें साझा करना और सकारात्मकता को बढ़ावा

देना आवश्यक है ताकि नकारात्मकता को समाप्त किया जा सके। 'शुद्ध उदेशम ' की यह अवधारणा दान और सामुदायिक उत्तरदायित्व की पारंपरिक समझ को कैसे चुनौती देती है?

२. गुरु नानक ने निर्गुण (बिना रूप) और सगुण (दिव्य रूप) की उपासना के बीच स्पष्ट विरोधाभास को कैसे संबोधित किया?

रामेश्वरम के रामनाथस्वामी मंदिर में सन्यासियों ने गुरु नानक से पूछा कि एक निर्गुण ईश्वर के भक्त होकर उन्होंने शिव मंदिर की यात्रा क्यों की। उन्होंने एक गहरे सबद के माध्यम से उत्तर दिया, जिसमें दोनों भक्ति मार्गों—निर्गुण और सगुण—के सह-अस्तित्व को दर्शाया गया। उन्होंने कहा कि दोनों मार्ग एक ही एकीकृत शक्ति से उत्पन्न होते हैं। अद्वैतवाद का यह दर्शन विविध धार्मिक अभिव्यक्तियों को कैसे एक करता है और सार्वभौमिक एकता को बढ़ावा देने की नींव रखता है?

३. अन्नामलाई हिल्स में कादन जनजाति के साथ हुई मुलाकात के दौरान गुरु नानक ने मानवीय संबंधों में भय की प्रकृति के बारे में क्या विचार प्रकट किए?

जब अन्नामलाई हिल्स में रहने वाली कादन जनजाति ने भाई मर्दाना को घुसपैठिया समझकर पकड़ लिया, तो गुरु नानक ने समझाया कि भय हमारे विचारों और निर्णयों पर हावी हो सकता है। उन्होंने बताया कि चूंकि हम सब एक ही पारिस्थितिक तंत्र का हिस्सा हैं, हमें एक-दूसरे से डरने की आवश्यकता नहीं है। अपने सबद में उन्होंने विस्तार से बताया कि भय के कारण अनेक विचार और व्यक्ति आते-जाते रहते हैं। सभी प्रकार के भय हमारे अपने ही मनोभावों से उत्पन्न होते हैं। गुरु नानक मानते हैं कि केवल एक ही सच्चाई है—निर्भय और निराकार सर्वव्याप्त सत्ता। यह संदेश समकालीन सामाजिक विभाजनों पर कैसे लागू होता है?

४. गुरु नानक ने रुहानी समझ में भौतिक इंद्रियों की सीमाओं को कैसे स्पष्ट किया?

एपिसोड में फकीर लक्कड़ शाह के साथ उनका गहरा वार्तालाप दर्शाया गया है, जिन्हें देखने में कठिनाई थी। यह क्षण इस विचार को प्रेरित करता है कि क्या विकलांग व्यक्तियों के पास रुहानी समझ की कमी होती है या उनकी अनोखी अनुभव-संपदा उन्हें और गहराई प्रदान करती है। गुरु नानक के सबद में यह स्पष्ट किया गया है कि ब्रह्मांडीय शक्ति सर्वव्यापक है और बिना भेदभाव के अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। जब अजपा रुहानी ध्वनि भीतर गूंजती है, तब संदेह और भय दूर हो जाते हैं। यह समझ पारंपरिक दृष्टिकोण को कैसे चुनौती देती है और हमें उन सीमाओं में छिपी संभावनाओं को पहचानने के लिए प्रेरित करती है जिन्हें हम अक्सर कमज़ोरी मान लेते हैं?

५. सत्ता और अहंकार पर गुरु नानक की टिप्पणी से नेतृत्व और मानवीय स्वभाव के बारे में क्या प्रकाश पड़ता है?

दौलताबाद के स्मारकों को देखते हुए, जिन्हें कभी मुहम्मद-बिन-तुगलक ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए बनवाया था, एपिसोड में यह उल्लेख किया गया है कि गुरु नानक का संदेश था कि जैसे लोहा भट्टी में पिघलता है और नया आकार लेता है, वैसे ही मोह में पड़े व्यक्ति बार-बार भटकते हैं। यह सत्ता पर दृष्टिकोण अहंकार की उनकी आलोचना से कैसे संबंधित है, जिसे उन्होंने उस सिमल वृक्ष के रूपक से समझाया जो ऊँचा तो है, परंतु स्वादिष्ट फल नहीं दे सकता?